بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصار اللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिरिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 30 मई 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

हमें चाहिए कि ख़िलाफ़त के साथ जुड़े रहें।

और ख़िलाफ़त के निज़ाम को क़ायम करने के लिए हर क़ुरबानी के लिए तय्यार रहें।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-30.05.2025

محلہ احمدیہ قادیان پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

اما بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ؕ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ۔

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ۔ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْئًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ۔ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अहमदिय्या जमाअत में ख़िलाफ़त का निज़ाम क़ायम हुए 117 वर्ष बीत चुके हैं। 1908 में यह निज़ाम क़ायम हुआ। अतः यह अल्लाह तआला का महान उपकार है अहमदिय्या जमाअत पर कि हम एक ऐसे निज़ाम का भाग हैं जिसकी पेशगोई अल्लाह तआला ने फ़रमाई कि मसीह व मेहदी के आगमन के बाद एक ऐसा दौर शुरू होगा जो इस्लाम के पुनरोत्थान का दौर है और फिर उसी निज़ाम में ख़िलाफ़त का दौर भी शुरू होगा जिसके बारे में आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्पष्ट रूप में भविष्य वाणी की थी कि तुम में नबुव्वत क़ायम रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा, फिर वह उसको उठा लेगा और ख़िलाफ़त अला मिन्हाजुन्नबुव्वः (नबुव्वत के दौर की तरह ख़िलाफ़त) स्थापित होगी, फिर अल्लाह तआला जब चाहेगा इस नेमत को भी उठा लेगा, फिर उसके विधान के अनुसार कष्टदायक राज्य क़ायम होगा, जब यह दौर पूरा होगा तो इससे भी बढ़ कर कष्ट एवं पीड़ा देने वाला राज्य स्थापित होगा, और यह फ़रमा कर आप स. चुप हो गए॥ अतः यह

पेशगोई थी आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिसके अनुसार अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नियुक्ति के बाद एक नया दौर इस्लाम के पुनरोत्थान का आरम्भ हुआ और आप अलै. के निधन के बाद ख़िलाफ़त का दौर भी शुरू हुआ।

हुज़ूरे अनवर ने तिलावत फर्मूदः आयतों का अनुवाद पेश करने के बाद फ़रमाया कि इन आयतों से पूर्णतः स्पष्ट है कि अल्लाह तआला ने मुसलमानों से वादा किया है कि तुम में ख़िलाफ़त का निज़ाम क़ायम होगा। ख़ुल्फ़ाए राशिदीन का ज़माना तीस साल तक रहा, अब तीस साल तक के लिए तो यह वादा नहीं था बल्कि एक व्यापक वादा था और इसकी व्याख्या आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी फ़रमा दी। अतएव इस बात को हम अहमदियों को याद रखना चाहिए कि हमने हज़रत मसीह मौऊद अलै. को मानकर अल्लाह तआला के आदेशों पर अमल करने का एक संकल्प किया है, परन्तु इसके लिए भी शर्तें हैं। अतः इन शर्तों को पूरा करना भी हमारे लिए अनिवार्य है।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं- सो ऐ मित्रो! जबकि कदीम (अनादि काल) से अल्लाह की सुन्नत यही है कि ख़ुदा तआला दो कुद्रतें (ज़ोर) दिखलाता है ता मुख़ालिफों की दो झूठी ख़ुशियों का विनाश करके दिखलावे.....मैं ख़ुदा की तरफ़ से क़ुदरत के रंग में ज़ाहिर हुआ और मैं ख़ुदा की एक मुजस्सम (साकार) क़ुदरत हूँ और मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत का मज़हर होंगे (प्रतिरूप) होंगे। सो तुम ख़ुदा की क़ुदरते सानी (दूसरी क़ुदरत) के इंतज़ार में इकट्ठे होकर दुआ करते रहो और चाहिए कि हर एक सालिहीन (दिव्य पुरुष) की जमाअत हर एक देश में इकट्ठे होकर दुआओं में लगे रहें ता दूसरी क़ुदरत आसमान से नाज़िल हो। उस समय जब आप अलै. ने यह इरशाद फ़रमाया था, हिन्दुस्तान में जमाअत थी और थोड़े से लोग बहार होंगे, परन्तु यह पेशगोई भी आपने एक रंग में फ़रमा दी कि हर देश में यह दुआ करते रहें, मानो कि भविष्य में ऐसा ज़माना आएगा कि जब दुनिया में हर जगह अहमदिय्या जमाअत फैल जाएगी, और आज हम वह ज़माना देख रहे हैं कि दुनिया में जमाअते अहमदिय्या फैली हुई है, और हर जगह ख़िलाफ़त से वफ़ा और प्यार और मुहब्बत का सम्बन्ध हमें नज़र आता है और भविष्य में सदेव इसके अनुसार अल्लाह तआला अपने फ़ज़्लों से हमें प्रदान करता चला जाएगा क्यूंकि यह अल्लाह तआला का वादा है। अतः हमें चाहिए कि ख़िलाफ़त के साथ जुड़े रहें और ख़िलाफ़त के निज़ाम को क़ायम करने के लिए हर क़ुरबानी के लिए तय्यार रहें।

कुछ लोग समझते हैं कि शायद ख़िलाफ़त, मलूकियत (राजा प्रथा) में बदल जाए, जमाअत अहमदिय्या में भी, इस पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने बड़ी सख़ती से इसका रद्द फ़रमाया, बड़ा खंडन किया और आपने फ़रमाया कि मलूकियत अहमदिय्या जमाअत में नहीं आएगी जब तक रूहानियत और तक़वा क़ायम है, इन्शाल्लाह तआला. निज़ामे ख़िलाफ़त जो है, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वह व्यवस्था है जो अल्लाह तआला की इच्छानुसार क़ायम हुआ और उसी के अनुसार चलता रहेगा, न कि किसी प्रकार की सांसारिक बादशाहत इसमें आएगी. ख़लीफ़ा-ए-वक़्त तो अपनी नमाज़ों में रातों को उठ कर जमाअत के लोगों के लिए दुआ करता है, क्या कोई राजा ऐसा है जो यह काम करता हो. अत: इस बात को यदि हम याद रखें और इसके अनुसार कर्म भी करें तो फिर हम कामयाब हो सकते हैं. ख़िलाफ़त का यह ऐसा निज़ाम है कि अल्लाह तआला ख़ुद दिलों को फेरता है, यही अल्लाह ताआला का समर्थन है और सदेव हर एक ख़िलाफ़त के ज़माने में हमने देखा है, अब दुनिया में आज आप भी देख

लें कि अहमदिय्या जमाअत ही है जो एक निज़ाम में पिरोई हुई है और अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत से जुड़ी हुई, ख़िलाफ़त से जुड़ी हुई, रहने के कारण इन पर अल्लाह तआला के असंख्य फ़ज़ल हैं. यह ठीक है कि दुश्मनों की तरफ़ से अहमदिय्या जमाअत पर अत्यधिक कष्टों की भरमार की जा रही है, विशेष रूप से पाकिस्तान में तथा कुछ अन्य देशों में भी, किन्तु अल्लाह तआला के फ़ज़ल से सब अपने ईमान पर क़ायम हैं और इसके बावजूद इस बात पर क़ायम हैं कि ये कठिनाईयाँ हमें हमारे दीन से नहीं हटा सकतीं और इसके बदले में अल्लाह तआला हम पर और हमारी नस्लों पर जो पुरस्कारों की वर्षा कर रहा है, उसका कोई मुक़ाबला ही नहीं है।

अतएव यदि हमने वास्तविक लाभ प्राप्त करना है ख़िलाफ़त की कृपा से, और वास्तविक रूप में अल्लाह तआला की कृपाओं का उत्तराधिकारी बनना है तो फिर हमें हर प्रकार के शिर्क से, अपने अहंकार से तथा अहम् से अपने आपको मुक्ति दिलानी होगी और इनसे अपने आपको पाक करना होगा. फिर अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया कि ये लोग ऐसे हैं जो नमाज़ का क़याम करने वाले हैं, जो ज़कात की अदाएगी करने वाले हैं. हर अहमदी को अल्लाह तआला के इस आदेश को याद रखना चाहिए, हर अहमदी को जो अपने आपको ख़िलाफ़त से सम्बद्ध समझता है और उसके साथ जुड़ कर रहना चाहता है और उससे लाभान्वित होना चाहता है, उसको यह बात सामने रखनी होगी कि हमने नमाज़ों के क़याम की ओर भरपूर ध्यान देना है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने नमाज़ों के क़याम की व्याख्या करते हुए एक स्थान पर अति सुन्दर रंग में यह फ़रमाया कि सलात का अति उत्तम भाग जुमः है जिसमें इमाम ख़ुतब: पढ़ता है और नसीहतें करता है जिससे क़ौमी एकता एवं अखंडता पैदा होती है, सबका क़िबला एक तरफ़ रखता है. आजकल मैं इस्लाम के इतिहास पर बातें कर रहा हूँ. आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन परिचय के विषय में बातें कर रहा हूँ, इसमें भी कई बातें ऐसी आ जाती हैं जो हमारे लिए नसीहत होती हैं और लोग इनके द्वारा बड़े लाभान्वित हो रहे हैं, इसके अतिरिक्त कि उनको इस्लाम के इतिहास का पता लग रहा है। अतः यह ख़िलाफ़त ही वह माध्यम है जो अल्लाह तआला ने हममें पैदा किया हुआ है, जिसके द्वारा एक इकाई अहमदिय्या जमाअत में पैदा हो गई है और दुनिया के दो सौ पन्द्रह देशों में रहने वाला हर अहमदी एक इकाई बन कर इस निज़ाम से जुड़ा हुआ है और अपना सुधार करने का प्रयास करता है. अल्लाह तआला ने ज़कात अदा करने का भी आदेश दिया है, यह भी अपनी धन सम्पत्ति को पवित्र करने के लिए अनिवार्य है, इसमें शेष अन्य क़ुर्बानियाँ भी शामिल हैं. आज हम देखते हैं कि केवल अहमदिया जमाअत के द्वारा ही यह अर्थ व्यवस्था जारी है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- कुछ ऐसी परिस्थितियाँ हैं जिनके कारण कुछ स्थानों पर कुछ कठिनाईयाँ भी आ रही हैं, परन्तु जो अहमदी हैं वे इन समस्त दुविधाओं को देखने के बावजूद इस बात पर अल्लाह का शुक्र करते हैं कि हमारे अन्दर ख़िलाफ़त का निज़ाम क़ायम है जो हमें संतुष्टि भी देता है और हमारी आवश्यकताओं को भी पूरा करने का प्रयास करता है. हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने फ़रमाया था कि दुनिया में कई घटनाएँ प्रकट होंगी, कुछ तो प्राकृतिक आपदाओं की घटनाएँ हैं, कुछ इंसानों की अपनी ग़लतियों के कारण युद्ध हो रहे हैं और उपद्रव पैदा हुए हैं. यदि इन लोगों ने अब भी अल्लाह तआला की ओर ध्यान नहीं दिया तो फिर एक विनाश दुनिया पर आने वाला है जिसकी हज़रत

मसीह मौऊद अलै. ने कई बार पेशगोई फ़रमाई है, अतएव ख़िलाफ़त की व्यवस्था के साथ जुड़ने वालों का दायित्व है कि वे इस तरफ़ ध्यान दें कि हमने दुनिया को भी विनाश से बचाना है और फिर इसके लिए दुनिया को अल्लाह तआला की ओर लाने का भरसक प्रयास करें और पैग़ाम को पहुंचाने के लिए अपने यथासम्भव संसाधनों एवं प्रतिभाओं को उपयोग में लाएं और इसके लिए अल्लाह तआला के विशेष फ़ज़ल हर अहमदी पर हों और वह अपनी नस्लों को और अपने आपको भी आपदाओं से बचाने वाला होगा, क्यूंकि ये आपदाएँ एवं विनाश जो हैं ये अत्यधिक गंभीर स्थिति धारण करती चली जा रही हैं और पता नहीं कि आगे और क्या स्थिति धारण करें जिसकी कल्पना मानव भी नहीं कर सकता. अतएव हमें सदेव याद रखना चाहिए कि अहमदिय्या ख़िलाफ़त के साथ जुड़ने से ही अब दुनिया की सलामती है।

हुज़ूरे ने हज़रत मसीह मौऊद अलै. का एक उद्धरण पेश करते हुए फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद ने फ़रमाया था कि अल्लाह तआला ने मुझसे वादा फ़रमाया है कि इस दुनिया का समापन नहीं होगा जब तक अल्लाह तआला मेरे सब वादे पूरे न कर दे, कुछ मेरे जीवन काल में और कुछ मेरे बाद. अतः हममें से हर एक का काम है कि ख़ुदा की प्रतिष्ठा दिलों में बिठाने वाले बनें और क्रियात्मक रूप में ख़ुदा तआला की तौहीद को अभिव्यक्त करने वाले, सम्पूर्ण आज्ञा पालन का नमूना दिखाने वाले और ईमान में उन्नति करते चले जाने वाले हों. अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि हममें से हर एक ख़िलाफ़ते अहमदिय्या को क़ायम रखने के लिए हर क़ुरबानी के लिए तय्यार रहे और हम जो प्रतिज्ञा करते हैं, उसे पूरा करने वाले हों, और अल्लाह तआला हमारे जीवन में ऐसा ज़माना लेकर आए कि जब हम देखें कि दुनिया में अल्लाह तआला की वहदानियत (एकेश्वरवाद) का झंडा हर जगह लहरा रहा है और आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में लोग झुंड के झुंड होकर आ रहे हैं और अल्लाह तआला के सम्पूर्ण आज्ञा पालकों में से बनने की कोशिश कर रहे हैं, वही दिन है जो हमारे लिए ऐसा बरकत वाला दिन होगा जब हम कहेंगे कि ख़िलाफ़त का जो अल्लाह तआला ने वादा किया था उसकी बरकतों से आज हम लाभान्वित हो रहे हैं. और यही दिन हैं जो दुनिया को विनाश से बचाने वाले दिन होंगे. अल्लाह तआला हमें अपना सुधार करने की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और अल्लाह तआला के सन्देश को दुनिया में पहुँचाने की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

हुज़ूरे अनवर ने अन्त में मुकर्रम कर्नल डा. पीर मुहम्मद मुनीर साहब, पूर्व संचालक फ़ज़ले उमर हस्पताल, रबवा, और मुकर्रमा सलीमा ज़ाहिद साहिबा पत्नी समीउल्लाह ज़ाहिद साहब, मुरब्बी सिलसिला, निवासी केनेडा की जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने का एलान फ़रमाया और मृतकों की मगफ़िरत एवं दर्जों की बुलंदी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131